

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. निम्न योगों का अल्पायु, मध्यायु व पूर्णायु में वर्गीकरण करें :-
 - i) शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में तथा बली शनि छठे भाव में या पाप ग्रह अष्टम में हो।
 - ii) अष्टमेश उच्च राशिस्य हो।
 - iii) पणफर भावों में अशुभ ग्रह।
 - iv) लग्नेश और अष्टमेश बारहवें या छठे भाव में।
 - v) शनि लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के साथ केन्द्र में हो।
 - vi) निर्बल गुरु लग्न में तथा पाप ग्रह त्रिकस्थान में हो।
 - vii) सूर्य व शनि राशि परिवर्तन में हो।
 - viii) पापग्रह उपचय भावों में तथा शुभ ग्रह केन्द्र में हो।
 - ix) बली लग्नेश त्रिकोण में व कोई अशुभ दृष्टि न हो।
 - x) अष्टम भाव में एक पापग्रह व उस पर पापग्रह की दृष्टि हो।

अथवा

क. महर्षि पराशर द्वारा दिए गए आयुर्दाय गणना के नियम बताएं?

ख. बालारिष्ट क्या है? यह किस स्थिति में भंग होता है?

2. निम्न कुण्डली के लिए अंशायु की गणना करें :-

जन्म 20.8.1944, 08.02 बजे, मुम्बई : दशा शेष - शुक्र 16व 5मा 19दि

लग्न - सिंह 12:30, सूर्य - सिंह 03:49 चन्द्र - सिंह 17:05

मंगल - कन्या 01:12, बुध - सिंह 28:34, गुरु - सिंह 12:12

शुक्र - सिंह 18:39, शनि - मिथुन 14:13, राहु-कर्क 04:24

3. किन्हीं तीन पर उदाहरण सहित चर्चा करें :-

i) छिद्र ग्रह ii) क्रूरदय हरण

iii) मिथुन व वृश्चिक लग्न के मारक ग्रह iv) दिन मृत्यु और दिन रोग

4. निम्न जन्म कुण्डली का अध्ययन कर समझाए कि यह अल्पायु वर्ग में आती है अथवा नहीं। यदि हाँ तो अल्पायु के योग बताएं।

जन्म - 2.11.1935, दशा शेष - शुक्र 8व 1मा 4दि.

लग्न - तुला 5:59, सूर्य - तुला 15:41, चन्द्र-धनु 21:12

मंगल - धनु 10:11, बुध - कन्या 27:06, गुरु - वृश्चिक 05:29

शुक्र - कन्या 00:13, शनि(व) - कुंभ 10:34, राहु - धनु 22:00

5. कौन से नियम पूर्णायु दर्शाते हैं? उदाहरण सहित दिखाएं।

भाग-II (ज्योतिष और चिकित्सा)

6. सत्य या असत्य लिखे :-

- i) अशुभ सूर्य व चन्द्रमा से कान की समस्या होती है।
- ii) अशुभ शनि व मंगल से आँखों की समस्या होती है।
- iii) हड्डियों का कैंसर शुक्र व चन्द्र से होता है।
- iv) चन्द्र, सूर्य व चतुर्थेश पर अशुभ प्रभाव हृदय रोग दर्शाता है।
- v) गर्भाधान का पहले माह पर शुक्र का अधिकार होता है।
- vi) गर्भाधान के छठे माह पर बृहस्पति का अधिकार होता है।
- vii) बुध, चन्द्र व मंगल के कारण मिरगी के दौरे पड़ते हैं।
- viii) यदि अष्टम भाव पापकर्तरी में हो तो आँखों की समस्या होती है।
- ix) मंगल व बुध के कारण माइग्रेन होता है।
- x) बृहस्पति के कारण यकृत में बिमारी होती है।

अथवा

चिकित्सा ज्योतिष में सभी भावों का महत्त्व समझाएं। बारह राशियाँ शरीर के किन भागों को दर्शाती हैं?

7. तीसरे, छठे, नौवें व बाहरवे भाव शरीर के किस अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। व मंगल, बृहस्पति व शनि के कारण से कौन से रोग होते हैं?

8. निम्न जातक का हृदय व आँख का आप्रेशन हुआ व उसके पश्चात् स्नायु रोग व स्पोन्डलाइटिस से ग्रस्त रहे। निम्न जन्म पत्रिका में यह किस प्रकार दिखाई देता है।

जन्म - 24.10.1922, दशा शेष - केतु 6व 6मा 14दि.

लग्न - मेष 9:35, सूर्य - तुला 07:32, चन्द्र - धनु 00:49

मंगल - मकर 02:54, बुध - कन्या 21:53, बृहस्पति - तुला 06:43

शुक्र - वृश्चिक 14:47, शनि - कन्या 20:19, राहु - कन्या 05:12

9. निम्न के कुछ योग बताएं।

क. बहरापन ख. लकवा ग. पिलिया घ. मुधमेह

10. संक्षिप्त में लिखें :-

क) चिकित्सा ज्योतिष में 22वें द्रेष्काण, चन्द्र से 64 वे नवांश के अधिपति व सर्प द्रेष्काण का क्या महत्त्व है?

ख) वक्री ग्रहों का चिकित्सा ज्योतिष में महत्त्व।